- 100 ग्रा नीम केक को मसलिन कपड़े में लपेट कर 1 लीटर पानी में रात भर सोकने के लिए छोड़ दें। सुबह पानी को छान कर उपयोग करना चाहिये।

प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

प्रमुख लक्षण	कारक	नियंत्रण
पत्तियां धब्बेदार, सिकुड़कर सूख जाती है, पौधे विकृत हो जाते हैं	ब्लाइट	संक्रमित पौधों को अलग कर नष्ट करना, पौधों की देखरेख से पहले हाथ साफ रखना
नए अंकुरित रोपणी गिर जाते एवं मर जाते हैं	डेंपिंग ऑफ	रोपण से पहले मृदा को निस्संक्रामित करना एवं बीज को कैप्टान से उपचारित करके बोना
पत्तियों पे गोल भूरा, काला दाग, पौधों से पत्तियों का गिरना	लीफ स्पॉट	रोग ग्रसित पत्तियों को हटाना, बेनोमिल या जिनेब 2 ग्राम/ली का स्प्रे
निचली पत्तियां एवं तनें धूसर हो जाती है एवं मुरझाये हुए लगते है	पावडरी मिल्डयू	वायु परिसंचरण बढ़ाएं एवं बेनोमिल या सल्फर का स्प्रे 3 ग्राम/ली
पत्तियों की निचली भाग पर संतरी, लाल– भूरे पीठ एवं धब्बे एवं पत्तियां मुरझाई हुई	रस्ट	वायु परिसंचरण बढ़ाएं एवं या जिनेब का स्प्रे एवं फूल पर बेनोमिल या सल्फर का स्प्रे

बीमारी रोकने हेतु वायु परिसंचरण बढ़ाना एवम संक्रमित पौधों को अलग कर नष्ट करना उत्तम रहता है।

जैव-कवकनाशी

ट्राइकोडर्मा विरिडी या ट्राइकोडर्मा हार्जियानम 4–5 ग्रा./किग्रा. बीज या 100 ग्रा./10 किग्रा. गोबर खाद में मिला कर 10 ग्रा./लीटर पानी में मिलाकर तने के पास मिट्टी भींगा कर करते हैं।

अन्य आम समस्या

- पत्तियों का पीला होना/स्टंटेड ग्रोथः पानी की कमी के कारण
- पत्तियों के नोक से पीलापन शुरू होना जो बाद में भूरा हो जाता है, ग्रोथ/कॉलर पे कालापन एवम स्टंटेड ग्रोथः ज्यादा पानी के कारण
- पौधों का लगाने के बाद सूखना तथा मरनाः ट्रांसप्लांटिंग शॉक के कारण
- पत्तियों के किनारे पर भूरापन/सूखना/नाजुक होना/गिरनाः स्कोर्चिंग/सनबर्न के कारण
- पत्तियों का पीलापन/गिरना/स्टंटेड ग्रोथ/तना पतला होना (प्रकाश की दिशा में पौधों का बढ़ना): प्रकाश की कमी के कारण

फूल न आना/खिलना/कम आना

- खाद की कमी या ज्यादा
- प्रकाश की कमी
- प्रतिकूल तापमान
- गमला छोटा होना

इन का ध्यान रखते हुए फूलों को बगीचे में उगा कर आनंद लेना चाहिये।

शैक्षणिक भवन

प्रशासनिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91–789746699

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशितः

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/78

बगीचों के लिए मौसमी फूल एवं उनकी देखभाल

संकलन एवं सम्पादन

डा. गौरव शर्मा

एवं

डा. प्रियंका शर्मा

उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

बगीचों के लिए मौसमी फूल एवं उनकी देखभाल

मौसमी फूल

एक वर्षीय पौधें उनको कहा जाता है जो अपना जीवन चक्र (अंकुरण, वनस्पति वृद्धि, पुष्पन, एवम् बीजण) एक ही वर्ष में पूरा करते है। इसी प्रकार मौसमी फूल अपना जीवन चक्र (अंकुरण, वनस्पति वृद्धि, पुष्पन, एवं बीजण) एक ही मौसम या वर्ष में पूरा करते है। इनका उपयोग क्यारी बनाने में एवं गार्डेन सुसज्जा हेतु, एजिंग, गमले में, लटकती टोकरी, रौकरी में तथा स्पेसिमेन पौधे के रूप मे किया जा सकता है। ये मौसम के अनुसार तीन प्रकार के होते है (ग्रीष्मकालीन, शरदकालीन एवम वर्षाकालीन):

फूलों का नाम

ग्रीष्मकालीन	वर्षाकालीन	शीतकालीन
कोचिया, कासमास, पोर्टुलाका, जिनिया, कोरिओप्सिस, गैलार्डिया, टिथोनिया, सनफ्लावर आदि	एमेरेन्थस, गोम्फ्रीना, बालसम, सिलोसिया, जिनिया, कासमास, गैलार्डिया, गेंदा, विंका, आदि	स्वीट एलाइसम, एंटिरहाइनम, कैलेंडुला, कार्न फ्लावर, स्वीट सुलतान, एनुअल क्राइसेंथिमम, डहेलिया, लार्कस्पर, डायन्थस, स्वीट विलियम, कैलिफोर्नियन पापी, कैन्डीटफ्ट, स्वीट पी, पिटूनिया, पापी, फ्लाक्स, एस्टर, लुपिन, लाईनम, मिगनोनेट, लाइनेरिया, स्टाक्स, वरबीना, सपोनेरिया / सोपवर्ट आदि
बोवाई का समय – जनवरी–फरवरी	बोवाई का समय – मार्च–अप्रैल	बोवाई का समय – सितम्बर–अक्टूबर
रोपाई का समय – फरवरी– मार्च	रोपाई का समय – मई–जून	रोपाई का समय – अक्टूबर–नवम्बर
फूलने का समय – अप्रैल–मई	फूलने का समय – जुलाई– अक्टूबर	फूलने का समय – दिसम्बर–फरवरी

नर्सरी को क्यारियों में या फिर प्रोट्रे में तैयार किया जाता है.

नर्सरी क्यारी में:

क्यारी की चौड़ाई – 1 मीटर, लंबाई – आवश्यकता अनुसार तथा ऊँचाई 20–30 सेमी. होनी चाहिये। क्यारी मे मिट्टी, रेत एवं खाद (वर्मिकम्पोस्ट या गोबर की) बराबर भाग मिला कर (1:1:1) बनाते है। बीज को 2.5 सेमी. की गहराई एवं 5 सेमी. की दूरी पर बोया जाता है एवं उसे नर्सरी हेतु तैयार किए गए मिश्रण से ढक देना चाहिए। हल्की सिंचाई हर दिन सुबह हजारे से करना चाहिए। बहुत ही छोटे बीज जैसे पेटूनिया या एंटीराइनम को रेत या खाद में मिला कर बोना चाहिए। ज्यादा पानी देने से पोषक तत्वों की लीचिंग एवं फंगल बीमारियों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

नर्सरी प्रोट्रे में:

प्रोट्रे 96 खानों की प्लास्टिक ट्रे होती है। इनमें मीडिया के रूप में कोकोपीट भर कर हर एक खाने में बीज की बुवाई की जाती है। लगभग 1 प्रोट्रे में 1.2 किग्रा. कोकोपीट लगता है। ये अपने वजन से 6 गुना पानी सोक सकता है। कोकोपीट. वर्मिकम्पोस्ट / गोबर की खाद (1:1) मिला कर प्रोट्रे मे भरें। अगर सिर्फ कोकोपीट का प्रयोग हो तो वारहवें एवं बीसवें दिन 19:19:19 खाद का 3 ग्राम प्रति 1 लीटर की दर से छिड़काव करें। इसमें मिट्टी, रेत एवं खाद के मिश्रण (2:1:1) का भी प्रयोग कर सकते हैं एवं इन्हें छायादार स्थान पर रखें।

पौध रोपाई

लगभग 1 महीने बाद या जब पौध में 6–8 पत्तियाँ आ जाए तब रोपाई शाम के वक्त करनी चाहिए। पौध निकालने के 2–3 दिन पहले सिंचाई बंद कर देनी चाहिए ताकि पौधे कठोर हो जाएँ। पौध उखाड़ने के पहले हल्की सिंचाई करना चाहिए ताकि पौध आसानी से बिना जड़ों को नुकसान पहुंचाए, उखाड़े जा सके और जड़ें टूटे नहीं। ल्यूपिन, स्वीटपी या नासटरशियम जैसे फूल पौध की नर्सरी नहीं डाली जाती है। इनके बीज का रोपण सीधा किया जाता है।

गार्डन/बगिया की देख-भाल

सर्दियों में पौधे बहुत धीरे बढ़ते हैं। इसलिए, सुनिश्चित करें कि उचित आकार के पौधों के साथ शुरुआत करें

लगाने की दूरी – पौध से पौध एवम कतार से कतार की दूरी ज्यादातर में 30 x 30 सेमी. रखते हैं।

सिंचाई – शुरू के 7–8 दिन, हर दिन हल्का पानी दें, इसके बाद हर 10–12 दिन बाद दें। पानी सुबह या शाम को दे सकते हैं।

खाद एवं उर्वरक – गोबर की खाद /2 कि.ग्रा./मी^{2} या फिर वर्मिकोंपोस्ट) कि ग्रा/मी^{2} दे सकते हैं जबकि रसाईनिक खाद के लिये यूरिया = 20 ग्रा, एस एस पी = 60 ग्रा एवम एम ओ पी =30 ग्रा/मी^{2} साथ ही यूरिया (20 ग्रा./लीटर पानी) घोल का छिड़काव 2–3 बार करे।

पिंचिंग– जब पौधे 25 से 30 सेमी ऊंचे हो जाएँ जैसे होलिहोक, लार्कस्पर मे तब करना चाहिये परंतु एंटीराइनम जैसे फूलों में नहीं करते हैं।

फूलों की डेड-हेडिंग – जब फूल सूख जाये तो उनको तोड़ या काट के हटा देना चहिये।

प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

प्रमुख लक्षण	कारक	नियंत्रण
पौधे के टिप पे छोटे–छोटे कीट का समूह, अंडे पत्तियों के नीचे	एफिड	इमिडाक्लोप्रिड का 2 मिली / ली शाम के समय छिड़काव
पत्तियां एवं पौधे बीटल द्वारा चबाये हुए एवं फूलों पे छेद	बीटल	इमिडाक्लोप्रिड का 2 मिली / ली शाम के समय छिड़काव
पत्तियों पे भूरा एवं सफेद धब्बा	थ्रिप्स	डाईमेथोएट का 1 मिली / ली छिड़काव
पत्तियों पे सफेद दाग एवं कर्लिंग ट्रेट	लीफ माइनर	डाईमेथोएट का 1 मिलीध्ली छिडकाव
पत्तियों एवं तनों का गुछन एवं चिपचिपापन	मिली बग	पाइरेथ्रम का छिडकाव
छोटे सफेद मखियों को पौधे के आसपास लहराना	वाइट फ्लाई	इमिडाक्लोप्रिड का 2 मिली / ली छिडकाव, पिली चिपचिपी पाश का प्रयोग

जैव-कीटनाशक

- 15–20 मिली लीटर नीम ऑइल को 1 लीटर पानी में अच्छी तरह मिला कर छिड़काव करें। इमल्सीफायर के रूप मे 15 मिली लीटर नीम ऑइल में 5 मिली लीटर तरल साबुन डालकर अच्छी तरह 4–5 मिनट उसे हिलाये तथा उसके बाद 1 लीटर पानी में मिलाये।
- एक किग्रा. नीम की पत्तियाँ को 5 लीटर पानी में डालकर रात भर सोकने के लिए छोड़ दें। सुबह पानी को छान कर उपयोग करें।